वर्ष 25, अंक 3 Sr. 430, मुंबई, मार्च 2026, पन्ने 24 कीमत रु. 5/-

॥ श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषणसूरिभ्यो नमः ॥

बीसवीं सदी के महान् योगी पू. पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य एवं उन्हीं के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. के चिंतनों को प्रसारित करने वाला मुखपत्र

अर्हद् दिव्य-संदेश

भारुन्दा में अंजनशलाका-प्रतिष्ठा महोत्सव

मंगल प्रवेश

सामैया दि. 18-2-26

वाराणसी नगरी उद्घाटन

मांगलिक

ज्वारारोपण विधि

कल्याणक विधान में स्वर्णतिलक

-: संपादक एवं प्रकाशक :-

सुरेन्द्र जैन, C/o. दिव्य संदेश प्रकाशन Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002.

M. 84 84 84 84 51 Correspondance Whatsapp only, Website : Divyasandesh.online

वासक्षेप-विधान

ध्वजा लाभार्थी पर वासक्षेप

प्रभुजी के माता-पिता एवं
इन्द्र-इन्द्राणी की स्थापना

जन्म-कल्याणक

संयम संवेदना में पूज्यश्री को अक्षत वधामणा दि. 17-2-26

'श्रमण हितशिक्षा' का विमोचन दि. 17-2-26

रत्न संदेश

लेखक :-
प्रवचन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

525 अलंकार-अहंकार

स्त्री में अलंकार का राग अधिक होता है तो पुरुष में अहंकार का राग अधिक होता है । पुरुष अपने अभिमान को बचाने के लिए कुछ भी कर सकता है । अभिमान ही उसके पतन का कारण बनता है । अहंकार को छोड़े बिना आत्मा अपने मौलिक स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकती है।

526 इंसानियत

सच्चा इंसान बनने के लिए
तीन गुणों को आत्मसात् करें–
1) बुरा न देखें-अश्लील दृश्य और दूसरों के दोष ने देखें ।
2) बुरा न सुनें-किसी की निंदा या गंदी बात को न सुनें ।
3) बुरा न बोलें-किसी को अपशब्द न बोलें ।

1.	PLACE OF PUBLICATION	: MUMBAI.
2.	PERIODICITY OF IT'SPUBLICATION	: MONTHLY.
3.	PRINTER'S NAME	: **SOMANI PRINTING PRESS**
	NATIONALITY	: INDIAN
	ADDRESS	: Gala No.3-4, Amin Ind. Estate, Sonawal Cross Road No.2, Goregaon (E), Mumbai-400 063. (Maharashtra)
4.	PUBLISHER'S NAME	: **SURENDRA JAIN**
	NATIONALITY	: INDIAN
	ADDRESS	: Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing-East Bay, Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. (Maharashtra)
5.	EDITOR'S NAME	: **SURENDRA JAIN**
	NATIONALITY	: INDIAN
	ADDRESS	: Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing-East Bay, Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. (Maharashtra)
6.	NAME AND ADDRESS OF OWNER	: **DIVYA SANDESH PRAKASHAN (REGD. TRUST)**
		: Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing-East Bay, Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. (Maharashtra)

I, **SURENDRA SOHANRAJJI JAIN,** HERE BY DECLARE THAT THE PARTICULARS GIVEN ABOVE ARE TRUE TO THE BEST OF MY KNOWLEDGE & BELIEF.

DATE : 15-03-2026 PLACE : MUMBAI.

ऐसे थे गुरुदेव हमारे

बीसवीं सदी के महान योगी, नमस्कार महामंत्र के अजोड साधक,
निःस्पृह शिरोमणि, प्रशांतमूर्ति पूज्यपाद पंन्यास प्रवर

श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य

संपादक : जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्य आचार्यदेव

श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराज

4 वाचनाओं के कतिपय अंश

–वाचना दाता : पू.आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.

❖ शास्त्र, अध्यात्म, कर्म आदि के रहस्यों को ग्रहण कर पूर्वाचार्यों ने ऐसे शास्त्रों की रचना की है, जो हमारी आत्मा के लिए हितकर सिद्ध हो । `ललित विस्तरा' ग्रन्थ उनमें से एक है ।

❖ **`नमोऽस्तु'** में रहा हुआ **`अस्तु'** शब्द यह बताता है कि अभी तक मुझे उत्कृष्ट भाव-नमस्कार मिला नहीं है । मैं उक्त भाव-नमस्कार की इच्छा अवश्य रखता हूं । इच्छायोग आदि के ऐसे रहस्य श्री हरिभद्रसूरिजीने यहां खोले हैं ।

नवकार पर पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. का विशाल साहित्य है । पठन कर लोंगे ? क्या भावित बना लोंगे ? सूत्र बोलते समय अर्थ का चिन्तन करते हो ?

यदि सूत्र धीरे-धीरे बोले जायें तो अर्थ का उपयोग रहता है ।

❖ ज्ञान है परन्तु साथ में प्रमाद भी है, अतः सोचें जितना अनुष्ठान हो नहीं सकता । आराधकों को इसका दुःख रहता है । अतः नम्रता रहती है । अभिमान नहीं आता । यही `इच्छायोग' है ।

❖ सामर्थ्ययोग अर्थात् केवलज्ञान की पूर्व अवस्था । जिस तरह सूर्योदय से पूर्व अरुणोदय होता है, उसी तरह केवलज्ञान से पूर्व यह `सामर्थ्ययोग' होता है, परन्तु इससे पूर्व इच्छायोग होना चाहिये ।

`इच्छायोग'** नींव है । **`शास्त्रयोग' मध्य भाग है । **`सामर्थ्ययोग'** शिखर है ।

प्रभु की जो सम्पत्ति प्रकट है, वह हमारी तिरोहित है । प्रभु एवं हमारे बीच में इतना ही अन्तर है ।

`आविरभाव थी सकल गुण माहरे, प्रच्छन्न भावथी जोय ।' **- पद्मविजयजी**

आत्म-सम्पत्ति को प्रकट करने के लिए प्रभु की शरण में जायें, चार की शरण स्वीकार करें । यह शरण स्वीकार करते ही प्रभु अपना हाथ पकड़ लेंगे और आत्म-सम्पत्ति प्रकट होगी ।

❖ किसी भी नाम से, किसी भी रूप में, किसी भी अनुष्ठान से प्रभु को पकड़ लें । प्रभु आपका उद्धार करने के लिए तत्पर हैं । अपनी कठिनाई यह है कि हम किसी को समर्पित नहीं होते । देव-गुरु अथवा धर्म को भी समर्पित नहीं होते । यह स्वतन्त्रता ही मोह की पराधीनता है, यह हम नहीं जानते । गुरु की परतन्त्रता से ही मोह की पराधीनता दूर होती है । पूज्य पंन्यास श्री भद्रंकरविजयजी म. यह बारबार समझाते थे ।

❖ भगवान तो पहले से ही परोपकार-व्यसनी होते हैं- **'आकालमेते परार्थव्यसनिनः ।'** परोपकार का व्यसन सहज रूप से हो, वे ही तीर्थंकर बन सकते हैं ।

❖ एक दुकान में चार फोन हों, किसी भी नम्बर पर फोन लगायें तो दुकान के साथ सम्पर्क हो सकता है न ? यहां भी नाम आदि चार भगवान हैं । किसी भी एक को पकड़े, भगवान पकड़ में आ जायेंगे ।

❖ ज्ञान का प्रकाश, श्रद्धा की शक्ति और अन्तर्मुखी दृष्टि बढ़ाने के लिए हम सब इस सिद्धाचल की शीतल छाया में आये हैं ।

श्री संघ हमसे भारी आशा रखता है ।

❖ आज गुरुवार है । गुरु-तत्त्व पर अभी अधिक अनुप्रेक्षा करने की इच्छा होती है ।

❖ इस **'ललित विस्तरा'** में मुख्य रूप से स्वरूप एवं उपयोग सम्पदा का अद्‌भूत वर्णन है, जिसे सुनकर भगवान की अचिन्त्य शक्ति आदि का ख्याल आयेगा - यह अतिशयोक्ति नहीं वास्तविकता है ।

नित्य पढ़े, सुनें, रटें तो ही उसका ख्याल आयेगा । **सर्व प्रथम पूज्य पं. भद्रंकरविजयजी महाराज ने इस ग्रन्थ के लिए सलाह दी थी ।**

❖ आत्म-शक्ति कदापि समाप्त नहीं होती । इस समय भी प्रभु की शक्ति कार्य कर ही रही है । सिद्धों का उपकार आज भी चालु है, अधिक क्या कहूं ? सिद्ध अधिक उपकार करने के लिए ही वहां गये हैं ।

गुरु आपका प्रमाद नष्ट करके आपको क्रिया में जोड़ते है । इसीलिए फिर क्रिया-वंचकता प्राप्त होती है ।

पू. मुनि धुरंधरविजयजी म. : क्रिया में लगाओंगे तो फिर ध्यान कब करेंगे ?

पूज्यश्री : क्रिया करते करते निर्विकल्प में जाते हैं ।

पू. धुरन्धरविजयजी म. : इस समय तो ध्यान का क्रेझ है ।

पूज्यश्री : मैं कहां ध्यान का निषेध करता हूं ? कहता हूं कि सविकल्प में से ही निर्विकल्प में जा सकते हैं । पहले मन-वचन-काया को शुभ में परिवर्तित करो, उसके बाद निर्विकल्प में जाओ । सीधे सातवी मंजिल पर नहीं जा सकते ।

आपके गुरु महाराज पूज्य पं. भद्रंकरविजयजी महाराज के साहित्य का पठन करें । उसमें यह सब है ।

❖ 'सामायिक-धर्म' पुस्तक उनकी ही है, उनके ही पदार्थ हैं । केवल नाम मेरा है ।

उनके ही परामर्श से 'ध्यान-विचार' ग्रन्थ पढ़ने के लिए निकाला था । मैंने वह निकाला और मुझे प्रतीत हुआ कि मुझे साक्षात् सर्वज्ञ मिल गये ।

पूर्वाचार्यों के अक्षर पढ़ने से ही 'जैन ध्यान पद्धति' पर परम श्रद्धा हुई ।

जहां आपकी रुकी हुई साधना है, उसे आगे बढ़ाने के लिए जैन-शासन बंधा हुआ है ।

हरिभद्रसूरिजी यही कहते हैं :

मुझे ही नहीं, इस ग्रन्थ-रचना के द्वारा सबको फल मिले । आप भोजन करो तो तृप्ति मिलेगी

ही । इसमें मांगना नहीं पड़ता कि हे भोजन ! तू मुझे तृप्ति दे । इस प्रकार आप धर्म करें तो आपको फल मिलेगा ही । मांगने की आवश्यकता ही नहीं है । मात्र अन्य के लिए आप भला चाहें ।

ऐसे करुणाशील हरिभद्रसूरिजी का नाम मुझे पू.पं. भद्रंकरविजयजी म. के द्वारा वि. संवत् 2013 में मांडवी में मिला था । फिर तो इतना रस उत्पन्न हुआ कि जितना बैठता उतना गुरु के मुख से लेकर बिठाता । प्रारम्भ में वैसे भी सूत्र के रूप में आता है, तत्पश्चात् अर्थ आते हैं और फिर तदुभय के रूप में तथा ऐदंपर्य के रूप में तो भगवान की कृपा से ही आता है ।

मेरे श्रम से मुझे मिला वैसा नहीं लगता । भगवान ने कृपा-वृष्टि की और मुझे मिला यही लगता है ।

यदि हरिभद्रसूरि पर बहुमान बढ़ेगा तो ही इस ग्रन्थ का हार्द हमें समझ में आयेगा । ऐसा हार्द समझ में आयेगा कि एक ग्रन्थ से अनेक ग्रन्थों के तालें खुल जाएंगें ।

दुर्योधन को एक भी गुणवान दिखाई नहीं दिया । युधिष्ठिर को एक भी दुर्गुणी दृष्टिगोचर नहीं हुआ । हमारे पास यदि युधिष्ठिर की आंखे होंगी तो संघ में गुणवानों के दर्शन होंगे ।

संघ गुणवान् है । इसका अर्थ यह हुआ कि इसमें असंख्य तीर्थंकर होने वाले हैं । आज भी तीर्थंकर नाम-कर्म निकाचित किये हुए असंख्य देव हैं, महाविदेह में भी हैं ।

पूज्यश्री : निकाचित हुए हैं या नहीं, यह तो ज्ञानी ही जान सकते हैं, परन्तु आपके गुरुदेव **पूज्य पं. भद्रंकरविजयजी गणि के लिए ऐसी कल्पना हो सकती है कि निश्चित रूप से वे किसी तीर्थंकर की आत्मा होंगी ।** गुणवान् को पहचानने के लिए गुणवान और ज्ञानी को पहचानने के लिए ज्ञानी बनना पड़ता है । उन्हें पहचानने वाले कितने ?

❖ गुरु की भक्ति में भी संघ की ही भक्ति है ।

यह संघ 48 गुणों से युक्त है - 27 साधु के तथा 21 श्रावक के, कुल 48 गुण हुए ।

आकाश में तारों की गिनती नहीं हो सकती, उस प्रकार संघ के गुणों की गिनती नहीं होती । कलिकाल में, पतन के काल में, ऐसा सब नहीं होता, यह न मानें । अब भी आचार्य, युग प्रधान आदि यहीं से ही होंगे । संघ ऐसी भक्ति करता हो तो अपना कर्तव्य क्या है ?

आपके गुरु महाराज पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. याद आये बिना रहते हैं ! वे रात-दिन संघ की चिन्ता करते थे कि मेरा संघ टुकड़ों में विभाजित क्यों हो ? एकता के प्रयत्न में सफलता नहीं मिलती तो भी तनिक भी हताश हुए बिना वे पुण्य बढ़ाने की ही बात करते थे ।

इस संघ की भक्ति वे द्रव्य से करते हैं, हमें भाव से करनी है । इसीलिए शास्त्रों का अध्ययन करना है । अत: चतुर्विध संघ की तरह द्वादशांगी भी तीर्थ है । द्वादशांगी का अध्ययन तीर्थ की ही भक्ति है । आप यदि अपना ज्ञान दूसरों को नहीं देते है तो अपराधी हैं । आवश्यक निर्युक्ति, अनुयोग द्वार, नन्दी ये आगमों की चाबियां हैं । वे हाथों में आ जायें तो समस्त आगमों के ताले खुल जायेंगे ।

पूज्य पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. का मनोरथ था कि संघ में मैत्री का वातावरण कैसे जमे ?

इस समय ये सब बातें युवान मुनि एवं बाल मुनि सुनते हैं । भविष्य में ये भी बड़े होंगे न ? वे ऐसा वातावरण सृजन करने का प्रयत्न करेंगे । संघ की भक्ति करने से क्या फल मिलता है ?

सिंदूर-प्रकर-प्रणेता कहते हैं कि निष्काम भक्ति करोगे तो इसका फल तीर्थंकर पद है ।

(क्रमश:)

महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा

-: लेखक :-
पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

वीर प्रभु के प्रथम शिष्य

लब्धि निधान श्री गौतमस्वामी

दीक्षा पर्याय–50 वर्ष ※ आयुष्य–92 वर्ष ※ निर्वाण–वीर संवत् 12

केवलज्ञान-लब्धि

गौतमस्वामी स्वयं छद्मस्थ थे, परंतु वे जिसको भी दीक्षा देते थे, उन्हें केवलज्ञान हो जाता था।

अभी तो उन्होंने 1500 तापसों को दीक्षा दी उन सभी को पारणा कराने के बाद वे उन सबको साथ में लेकर भगवान महावीर के पास आ रहे थे।

परंतु यह क्या ? प्रभु महावीर तक पहुँचते पहुँचते तो वे सब केवली बन गए।

कैसा था यह अद्भुत चमत्कार ! वे स्वयं छद्मस्थ और उनके सब शिष्य केवली ! वे 50000 केवली शिष्यों के गुरु थे। भगवान महावीर के 14000 शिष्य थें, जिनमें मात्र 700 ही केवली थें, अर्थात् 5% शिष्यों को ही केवलज्ञान हो पाया था, जबकि भगवान गौतमस्वामी के 50000 में से 50000 केवली थे अर्थात् उनका Result 100% था।

यह सब लब्धियाँ उन्हें प्रभु महावीर के प्रभावक अनुग्रह बल से ही प्राप्त हुई थी।

शिष्य के हृदय में गुरु का वास होना, कोई बडी बात नहीं हैं, परंतु गुरु के हृदय में शिष्य का वास होना एक बहुत बड़ी विशेषता है। गौतमस्वामी अपने गुरुदेव भगवान महावीर के हृदय में बसे हुए थे।

गौतमस्वामी का सब कुछ अद्भुत-आश्चर्यकारी था।

1) अहंकारोऽपि बोधाय :- सामान्यतया यह नियम है कि जिसे कुछ पाना होता है, उसे नम्र बनना पड़ता है । नम्रता से ही व्यक्ति अपने जीवन में कुछ प्राप्त कर सकता है ।

अहंकारी व्यक्ति के लिए कुछ भी पाना कठिन है ।

नदी में से जल को पाना है तो घड़े को झुकना ही पडता है ।

याचक को कुछ पाना हैं तो शेठ के आगे उसे झुकना ही पड़ता है ।

परंतु आश्चर्य है कि गौतमस्वामी भगवान महावीर के पास कुछ **'पाने'** की भावना से नहीं गए थे । खुद भगवान महावीर उन्हें प्रतिबोध देने के लिए एक ही रात्रि में 12 योजन का विहार कर अपापापुरी पधारे थे ।

गौतमस्वामी अहंकारी बनकर प्रभु महावीर के पास गए थे, फिर भी उनका अहंकार **'प्रतिबोध'** का ही कारण बना ।

2. रागोऽपि गुरुभक्तये :- गौतमस्वामी के दिल में भगवान महावीर के प्रति गाढ़ राग था । यह स्नेह का तंतु अनेक भवों से जुड़ा हुआ था ।

◆ भगवान महावीर मरीची के भव में थे, तब गौतमस्वामी **'कपिल'** नाम के राजकुमार थे, उस कपिल ने मरिचि के पास दीक्षा अंगीकार की थी और उसने मरिचि की खूब सेवा की थी ।

◆ त्रिपृष्ट वासुदेव के भव में गौतमस्वामी का जीव उनके रथ का सारथी था ।

वह राग ही उनके केवलज्ञान में बाधक था । फिर भी उनका वह राग किसी अन्य वस्तु पर नहीं था, वह राग भी गुरु भक्ति का ही कारण था ।

3. विषादः केवलाय अभूत् :- प्रभुवीर के निर्वाण के बाद गौतमस्वामी ने जो खेद किया, वह खेद भी उनके केवलज्ञान का ही कारण बना । सामान्यतया मानवी खेद करके आर्तध्यान करके नए कर्म ही बांधता है, परंतु गौतमस्वामी का तो खेद भी केवलज्ञान का ही कारण बना था ।

सचमुच, गौतमस्वामी का सब कुछ अद्‌भुत था ।

नम्रतामूर्ति

गौतमस्वामीजी आनंद श्रावक के वहां गोचरी पधारे । आनंद ने भावपूर्वक वंदन किया ।

आनंद ने पूछा **'भगवंत ! श्रावक को अवधिज्ञान हो सकता हैं ?'**

गौतमस्वामी ने कहा, **'अप्रमत्त भाव से आराधना करनेवाले श्रावक को अवधिज्ञान भी हो सकता है ।'**

प्रभो ! मुझे अवधिज्ञान हुआ है, उस अवधिज्ञान के बल से पूर्व पश्चिम और दक्षिण दिशा में लवण समुद्र के 500 योजन तक के क्षेत्र को, ऊपर सौधर्म देवलोक तक तथा नीचे रत्नप्रभा पृथ्वी के लौलुच्य नरकावास तक के भावों को देख सकता हूँ ।'

`आनंद ! श्रावक को इतना अवधिज्ञान नहीं हो सकता हैं, अतः तुम मिच्छा मि दुक्कडं दो ।'

``भगवंत ! प्रभु के शासन में सत्य बात कहनेवाले को **मिच्छा मि दुक्कडं** कहने का नहीं हैं, अतः वास्तव में तो आपको मिच्छा मि दुक्कडं देना चाहिए ।'' आनंद श्रावक ने विनयपूर्वक प्रत्युत्तर दिया ।

आनंद की इस बात को सुनकर कुछ भी विवाद में उतरे बिना गौतमस्वामी अपने मन की शंका के समाधान के लिए भगवान महावीर के पास आए और भरी सभा में प्रश्न किया ।

`प्रभो ! क्या श्रावक को इतना अवधिज्ञान हो सकता है ?'

प्रभु ने कहा, `हाँ गौतम ! श्रावक को इतना अवधिज्ञान हो सकता हैं, तुम्हारी भूल है । तुम जाकर आनंद श्रावक को मिच्छा मि दुक्कडं दे दो ।'

गौतम स्वामीजी छट्ठ के पारणे एकासना और पुनः छट्ठ की तपश्चर्या करते थे, उस समय वे गोचरी वहोरकर आए हुए थे, परन्तु उसी समय उन्होंने भगवान महावीर की आज्ञा शिरोधार्य की और तत्काल आनंद के पास जाकर अपनी भूल का **मिच्छा मि दुक्कडं** दिया ।

उन्होंने यह बहाना नहीं निकाला कि अभी गोचरी आ गई है-छट्ठ का पारणा भी है-पारणा करके फिर चला जाऊंगा ।' कैसी महानता थी गौतमस्वामी की ! गुर्वाज्ञा पालन में वे कितने तत्पर थे ।

मंगलकारी नाम

गौतम स्वामी का गौत्र भी मंगल स्वरूप है ।

गौ अर्थात् गाय-**कामधेनु** गौ अर्थात् **गौरवशाली**–वीरप्रभु के शासन का प्रथम गौरव पात्र ।

त अर्थात् तरु-**कल्पतरु** त अर्थात् **तत्परशील**–प्रभुकी वाणी सुनने में सदैव तत्पर ।

म अर्थात् मणि-**चिंतामणि** म अर्थात् **मर्यादाशाली**–प्रभुकी हर आज्ञा–मर्यादा के पालक ।

गौतम स्वामी कामधेनु, कल्पतरु और चिंतामणि रत्न से भी बढ़कर थे । कामधेनु आदि तो इहलौकिक भौतिक सिद्धियों को ही प्रदान करने वाले हैं, जबकि गौतमस्वामी का नाम आत्मा की समस्त सिद्धियों को प्रदान करनेवाला है ।

महा-दानेश्वरी

जगत् में धन आदि का दान करनेवाले तो बहुत मिलेंगें हैं, परंतु उन दानवीरों का दान भी मर्यादित होता है, वे अपनी संपत्ति का 5-10-20-25 प्रतिशत ही दान करनेवाले होते हैं । अपने पास हो, उसमें से यत्किंचित् वस्तु का दान करने में कोई विशेष बहादुरी नहीं है ।

गौतम स्वामी ने तो उस वस्तु का दान किया था, जो उनके पास नहीं थी ।

केवलज्ञान की प्राप्ति के पूर्व गौतमस्वामी चार ज्ञान के धनी थे, उनके पास केवलज्ञान नहीं था, परंतु आश्चर्य है कि वे जिसे दीक्षा देते थे, उसे केवलज्ञान हो जाता था ।

ठीक ही कहा है–

'जिहां जिहां दीजे दीक्ख, तिहां तिहां केवल ऊपजे ए ।'

गौतम स्वामी भगवंत जिन जिन को दीक्षा देते थे, उन्हें केवलज्ञान हो जाता था । **(क्रमशः)**

प्रेरक कहानियाँ

लेखक :
प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

181. निर्भयता महल में नहीं, स्वतंत्रता में है

एक सम्राट् ने चोर, डाकू तथा हत्यारे के भय से महल के अन्य दरवाजे बंद कराकर एक ही दरवाजा रखा और वह अपने आपको सुरक्षित समझने लगा ।

भिक्षा के लिए आये संन्यासी ने यह देखकर कहा, 'महल में एक भूल रह गई है । राजा ने पूछा, कौनसी ?'

संन्यासी ने कहा, 'यह दरवाजा भी बंद कर दो तो आप पूर्ण सुरक्षित हो जायेंगे !' फिर पहरें की भी जरुरत नहीं रहेगी !

सम्राट् ने कहा, **'तब तो मौत हो जायेगी !'**

संन्यासी ने कहा, 'वह तो अभी भी बनी हुई है, एक दरवाजें से क्या फर्क पडता है ? एक दरवाजे के बंद होने से कब्र बन जाती है तो तीन दरवाजों के बन्द होने से कितनी कब्रें बन गई है ?'

निर्भयता दरवाजों से नहीं, आत्मा की स्वतंत्रता से प्राप्त होगी, महल के सेवन से नहीं, उसके बंधन-मुक्ति से प्राप्त होगी ।

182. अहंकार को सिद्ध किया

पेरिस के विश्व विद्यालय के दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक ने अपनी कक्षा में कहा-**'मैं दुनियाँ का सबसे बड़ा आदमी हूँ ।'** विद्यार्थी हंसने लगे ।

उसने कहा, **'मैं सिद्ध करके बताता हूँ ।'** फिर उसने दुनिया के नक्शे को उठाकर कहा, **'विश्व में सर्वश्रेष्ठ देश कौन सा है ?'**

विद्यार्थी फ्रांसीसी थे, अत: बोले, **'फ्रांस'** ।

प्राध्यापक ने कहा, **'फ्रांस में सर्वश्रेष्ठ नगर ?'**

विद्यार्थी पेरिस के थे अत: बोले, **'पेरिस'** ।

प्राध्यापक ने कहा, **'पेरिस में सर्वश्रेष्ठ स्थान कौन सा ?'**

विद्यार्थी उसी विश्व विद्यालय में पढ़ते थे, अत: बोलें, **'यह विश्व विद्यालय !'** प्रोफे. ने कहा, **'इस विश्व विद्यालय में सर्वश्रेष्ठ विषय कौन-सा है ?'**

सभी दर्शन शास्त्र के विद्यार्थी होने से बोले-दर्शन शास्त्र । प्रोफेसर ने कहा, **'तो बोलो, इस विभाग का अध्यक्ष कौन है ?'** उन्होंने कहा, **'आप !'** उसने कहा-इससे सिद्ध हो गया कि दुनिया का सर्वश्रेष्ठ मनुष्य मैं हूँ । **(मनुष्य किसी न किसी प्रकार से अपने अहंकार को ही पुष्ट करता है ।)**

183 अहंकार से विनाश

एक दिन नदी में भारी तुफान के साथ बाढ़ आई ! नदी किनारे अनेक छोटे-बडे वृक्ष थें ! हवा का तुफान आते ही छोटे-छोटे वृक्ष झुक गये, वे नम्र बन गये और तुफान भी उन्हें नष्ट किये बिना आगे बढ़ गया ।

नदी तट पर बडे-बडे वृक्ष भी खडे थें, परन्तु वे अभिमान से अक्कड़ थे-वे झुके नहीं ! वे मानते थे कि महाकायवान् ऐसे हमें कौन डिगा सकता है ? परन्तु तुफान व बाढ़ में इतनी तेजी थी कि उन्होंने इन अक्कड वृक्षों को मूल से ही उखेड दिया और अपने प्रवाह में उन्हें भी बहा दिया ।

(नम्रता में जीवन का रक्षण है और अहंकार में जीवन का विनाश है ।)

184. मैं इतना अकृतज्ञ नहीं हूँ ।

एक बादशाह को एक मंत्री के प्रति अत्यंत प्रेम था । सदा साथ ही रहते थे ! भोजन भी दोनों साथ में करते थें ! एक बार दोनों घूमने गये ! बादशाह घोडे पर था । वृक्ष पर मात्र एक ही फल लगा हुआ था । राजा ने फल तोडकर चाकू से चिरा । उसकी एक फांक मंत्री को दी । मंत्री ने कहा, 'बहुत ही मीठा फल है । पुन: एक फांक मांगी, राजा देता गया और मंत्री मांगता गया ! अंत में मात्र एक ही फांक रह गई थी । राजा हैरान हो सोचने लगा, **'कैसा मुर्ख है, मुझे चखने भी नहीं देता ?'** अब तो हद हो गयी ! मंत्री ने उसे छिनना चाहा परन्तु राजा ने उसे तुरन्त ही मुँह में डाल दिया । वह फल बहुत ही कडवा था ।

राजा ने कहा, **'अरे तू कितना पागल है, यह तो कडवा जहर है ।'**

मंत्री ने कहा, 'राजन् ! आपके हाथों से मुझे बहुत मीठे फल खाने को मिले है तो इस कडवे फल के लिए क्या शिकायत करुं ?' मैं इतना अकृतज्ञ नहीं हूँ ।

(गुरु के मीठे वचन की भांति कडवे वचन भी प्रेम से पीने चाहिये ।)

185. सुख स्वर्ण मृग है

कहते है रामचन्द्रजी स्वर्णमृग के पीछे भागे । वे स्वर्णमृग के भ्रम को पहचान नहीं पाये । जिसके फल स्वरुप सीता का अपहरण हो गया ।

सुख भी स्वर्ण मृग है ! बाह्य पौद्गलिक पदार्थ से सुख प्राप्ति के भ्रम के कारण अपने अंदर का राम (आत्मा) उसके पीछे दोड़ने लग जाता है और उधर अपनी अन्तरात्मा को खो बैठता है । सीता के अपहरण के बाद युद्ध-संघर्ष और हत्याएँ प्रारम्भ हुई और इधर अंतरात्मा के खोने के बाद सभी पाप जीवन में घुस गये । (क्रमश:)

तत्त्वप्राप्ति दुर्लभ है

लेखांक-35

विवेचनकार :– **मरुधर रत्न पू.आचार्य देव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

नवोदित लेखक :– **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.**

यथा यथा कार्यशताऽऽकुलं वै, कुत्रापि नो विश्रमतीह चित्तम् ।
तथा तथा तत्त्वमिदं दुरापम्, हृदि स्थितं सारविचार-हीनैः ।।35।। (उपजाति)

शब्दार्थ

यथा यथा=जैसे जैसे, **कार्यशताऽऽकुलं=**सैकडों कार्यों में आकुल, **कुत्रापि=**कहीं भी, **नो=**नहीं, **विश्रमति=**विश्राम पाता है, **इह=**यहाँ, **चित्तम्=**मन, **तथा-तथा=**वैसे-वैसे, **तत्त्व=**आत्मिक सुख, **इदं=**यह, **दूरापम्=**दुर्लभ है, **हृदि=**मनमें, **स्थितं=**अनुभव किया हुआ, **सारविचार-हीनैः=**सार और असार के विवेक से रहित विचारों के द्वारा ।

गाथार्थ

जैसे-जैसे सैकडों कार्यों में आकुल मन यहाँ कहीं पर भी विश्राम नहीं पाता है, वैसे-वैसे सार-असार के विवेक का विचार जिसके हृदय में नहीं है ऐसे जीवों को आत्मिक शांति रुप यह तत्त्व प्राप्त होना दुर्लभ है ।

विवेचन

व्यक्ति की मृत्यु के बाद जब मृतक की शोक सभा होती है तब शोक सभा में रहे लोग मृतक के जीवन में रहे अनेक गुणों की प्रशंसा करते है तो साथ ही सभी एक प्रार्थना अवश्य करते है–**'मृतक की आत्मा को शांति प्राप्त हो ।'** इसका अर्थ है कि मरने से पहले व्यक्ति के पास दूसरी सारी सम्पत्ति थी, एक मात्र शांति नहीं थी । क्योंकि प्रार्थना उसकी करते है जो नहीं होता है ।

ग्रंथकारश्री वैराग्य रस से भूरपूर इस ग्रंथ के अंतिम श्लोकों के माध्यम से मन की स्थिरता पर खूब भार दे रहे है । वे कहे रहे है–जैसे जैसे व्यक्ति सैकडों कार्यों में व्यस्त रहता है वैसे वैसे मन चंचल बना रहता है, जिस कारण से हीन विचारों में व्यस्त हुए मन में तत्त्व की प्राप्ति होना दुर्लभ है । अतः मन की शांति पाने के लिए निरर्थक प्रवृत्तियों का त्याग करना जरुरी है ।

चार गति रूप इस संसार में परिभ्रमण करती हुई आत्मा को मानसिक शांति की प्राप्ति अत्यंत दुर्लभ है क्योंकि मानसिक शांति का कारण तत्त्वबोध है । तत्त्वबोध होना और भी दुर्लभ है । शांत-सुधारस ग्रंथ में बोधिदुर्लभ भावना में तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के लिए कुछ संयोगों को आवश्यक बताए है । उन संयोगों की प्राप्ति अत्यंत ही दुर्लभ है ।

(1) मनुष्य भव – अनंतानंत जीवराशि में मनुष्य की संख्या अति अल्प है । साधारण वनस्पति काय में जीवों की संख्या अनंत है । देवता, नारक, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय और प्रत्येक वनस्पतिकाय में जीवों की संख्या असंख्य है । परंतु सबसे कम मनुष्य है । मनुष्य मात्र ढाई द्वीप में ही पैदा होते है । सभी मनुष्य क्षेत्र में पैदा होनेवाले अधिकतम मनुष्य की संख्या मात्र 29 अंक की है । वह संख्या है–79,22,81,62,51,42,64,33,75,93,54, 39,50,336 इससे अधिक मनुष्य कभी नहीं हो सकते । मनुष्य जन्म पाने के लिए सभी सम्यग्दृष्टि देवता तरसते है । तेउकाय, वायुकाय और साँतवीं नरक के जीवों को छोडकर मनुष्य गति में सभी जीवों के आने के दरवाजे खुले है । सभी गतियों में प्रति दिन असंख्य जीवों की मृत्यु होती है परंतु उनमें से मनुष्य बनने का सौभाग्य अति अल्प आत्माओं को ही मिलता है, क्योंकि मनुष्य की संख्या अन्य जीवों की अपेक्षा खूब कम है ।

(2) आर्यदेश – वर्तमान में हमे दिखने वाला मनुष्य क्षेत्र से भी नहीं दिखने वाला मनुष्य क्षेत्र खूब बडा है । मनुष्य उत्पत्ति के 101 क्षेत्र में से 30 अकर्मभूमि और 56 अन्तर्द्वीप में तो सर्वथा धर्म का अभाव है । 15 कर्मभूमि में भी 5 महाविदेह क्षेत्र में हमेशा धर्म है परंतु 5 भरत क्षेत्र और 5 ऐरावत क्षेत्र में मात्र 10% काल में धर्म है । **हम जिस भरतक्षेत्र में रहते है, उसमें भी छह खंड के क्षेत्र में मात्र 25½ क्षेत्र ही आर्यदेश है, शेष सभी क्षेत्र अनार्य देश है । मनुष्य जन्म प्राप्त होने के बाद यदि अनार्य देश में जन्म हुआ हो कि जहां मात्र मारो-काटो की ही बात होती है तो वहाँ धर्म तत्त्व तो क्या धर्म शब्द श्रवण भी अशक्य है ।**

(3) सुकुल – आर्य देश में भी कई कुल ऐसे है जिनमें धर्म के कोई संस्कार नहीं होते है । सुकुल में अच्छे संस्कार जन्म से ही प्राप्त होते है और खराब कुलों में वातावरण के कारण ही दुर्जनता के दोष स्वत: प्राप्त होते है । अत: तत्त्व बोध के लिए सुकूल में जन्म प्राप्ति भी आवश्यक है ।

(4) विविदिषा – विविदषा अर्थात् धर्म श्रवण की इच्छा । जीवों को दुनिया की सारी बाते जानने की इच्छा है, परंतु अपने आत्मिक स्वरुप को जानने की इच्छा ही नहीं होती । **देश-विदेश में होने वाली छोटी-बडी सभी खबरों को जानने के लिए व्यक्ति T.V. पर समाचार देखता है, अखबारों को पढता हैं । सोने-चांदी और शेयरबाजार में भावों के उतार चढाव जानकर आश्चर्य करता है ।**

प्राय: करके दुनिया के लोग आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा और परिग्रह संज्ञा के कारण दिन-रात उनके विषयों की प्राप्ति और रक्षण में ही अपना पूरा जीवन व्यतीत करते हैं । व्यापार बढाने

और Tax को बचाने के लिए होने वाले Seminar में दिलचस्पी रखते हैं । बचपन से लेकर जीवन के 15-20 साल मात्र व्यावहारिक पढाई के पीछे बीता देते है । बडी-बडी डिग्रियां पाने देश-विदेश के कई क्षेत्रों में यात्रा और आवास भी करते है । **छोटी-बडी सभी मुश्किलों को हंसते-मुख सहन करते है, परंतु लक्ष्य मात्र अर्थार्जन करना और उसके द्वारा भौतिक सुख पाना ही रहता है । धर्म के वचन सुनने की इच्छा भी नहीं जगती है ।**

(5) धर्मश्रवण – कदाचित् पूर्वभव के पुण्योदय से धर्मश्रवण की इच्छा पैदा हो जाय तो भी सद्गुरु के पास धर्म शासन के अनुसार धर्मश्रवण प्राप्त होना कठिन है । जीवन में सद्गुरु का सम्पर्क ही नहीं हो पाता है । संसार के भौतिक सम्बंधों के मोह के कारण धर्म श्रवण हेतु सद्गुरु के पास में जाने से भय लगता है । मन में अनेक कुविकल्प पैदा होते है कि गुरु के समीप में जाने पर वे दान देने की प्रेरणा तो नहीं करेंगे ? अथवा अपने मीठे-वचनों से मुझे प्रलोभन बताकर मुझे सारे संसार का त्याग तो नहीं करा देंगे ? अथवा मन के भीतर अभिमान होता है कि, गुरु भगवंत क्या जानते हैं, उनसे ज्यादा ज्ञान तो मुझे भी है । **अथवा मन में एक अवज्ञा का भाव होता है कि साधु-संतों का तो यही धंधा है, वे तो सभी को मौत के प्रसंगों को बताकर लोगों को डराते है और अपने शिष्य बनाने के लिए हम लोगों के घर तोडते है । इससे अच्छा तो उपाश्रय में जाना ही नहीं । ऐसा निर्णय करने के कारण देव-गुरु-धर्म की सामग्री पाने पर भी उससे दूर ही रहते है ।**

कदाचित् उपाश्रय में आकर गुरु के समीप में रहे तो भी प्रवचन नहीं सुनते है । कई ऐसे लोग होते है जो संघ-शासन के सभी कार्य करते हैं, मंदिर निर्माण, उपाश्रय निर्माण आदि शुभ कार्यों में तन-मन और धन का योगदान हैं, परंतु प्रवचन श्रवण से दूर रहते हैं । संघ-शासन के कार्य भी मात्र अपना मान-सम्मान पाने के लिए करते हैं । कदाचित् प्रवचन में हाजरी भी दे तो अपना बहुमान पाने के लिए । प्रवचन के मर्म के समझने के इरादे वाले अति अल्प श्रोता होते हैं ।

(6) सद्बोध प्राप्ति – सद्गुरु के समीप में जाकर कोई धर्मशास्त्रानुसार प्रवचन श्रवण करने पर भी मिथ्यात्व दोष के कारण उनपर श्रद्धा पैदा नहीं होती । **''आत्मा, परलोक, स्वर्ग, नरक ये किसने देखे है ? भगवान को किसने देखा है ? भगवान के जमाने में विज्ञान का इतना विकास नहीं हुआ था और आज विज्ञान खूब विकसित हुआ है । आलू-प्याज-पानी-बासी भोजन आदि में कहां कोई जीव दिखते हैं ? स्वर्ग भी यही है और नरक भी यही है । 5 Star Hotel स्वर्ग है और केन्सर की हॉस्पिटल नरक है ।''** ऐसी-ऐसी बाते करके प्रभु के वचनों का उपहास उडाते हैं ।

कदाचित् आत्मा, परलोक आदि के विषयों पर श्रद्धा पैदा हो जाय तो भी दुनिया के प्रवाह और विज्ञान के संशोधनों के कारण अनेक कुशंकाएँ मन में पैदा होती है । सत्य ज्ञान के अभाव में और शंका निवारण न होने से धर्म वचनों पर दृढ श्रद्धा नहीं हो पाती है ।

(7) आचरण – अत्यंत ही दुर्लभ ऐसे परमात्मा के वचनों का श्रवण और उन वचनों पर श्रद्धा पैदा हो जाय तो भी अनादि काल के कु-संस्कारों के कारण आत्मा के छह अंतरंग शत्रु, साधकात्मा को साधना में विक्षेप करते हैं । अतरंग शत्रु –

1) काम – स्व स्त्री अथवा पर स्त्री के विषय में मानसिक विकार भाव पैदा होना काम है । काम वासना की गुलामी चरमशरीरी आत्मा को भी हैरान करती है । पांच इन्द्रियों के अनुकूल विषय भोग की इच्छा के कारण साधकात्मा अपने आत्महित से च्यूत होकर अपने भवभ्रमण को खूब बढा देती है ।

2) क्रोध – अपना अथवा दूसरों का होने वाला नुकसान देखे बिना कोप करना, क्रोध है । क्रोध के आवेश में व्यक्ति अंध हो जाता है । उससे विवेक रुपी आँखे बंध हो जाती है । काम की तरह क्रोध भी जीवात्मा को हैरान कर भवभ्रमण बढा देता है । अल्प कालीन क्रोध के कारण साधकात्मा अपने वर्षों के निर्मल चारित्र जीवन को भी हार जाती है ।

3) लोभ – निष्कारण धन का संग्रह करना अथवा दान के योग्य जीवों को अपना धनादि प्रदान न करना लोभ है । दुनिया में भी लोभी व्यक्ति बदनाम होता है । लोभ को सर्वगुण नाशक माना जाता है । लोभ के वशवर्ती जीव के जीवन में माया, झूठ, छल, कपट आदि पापों का प्रवेश हुए बिना नहीं रहता ।

4) मान – किसी के द्वारा दी गई सही सलाह को भी अपने झूठे आग्रह के कारण स्वीकार न करना मान है । मानी व्यक्ति किसी के आगे झुकने तैयार नहीं होता है और अन्य का अपमान करने में क्षणभर भी देरी नहीं करता है ।

5) मद – जाति, कुल, बल, ऐश्वर्य, ज्ञान, लाभ, तप, ऋद्धि आदि प्राप्त हुई शक्तियों का गर्व करना, मद है । इस मद के कारण बडे-बडे साधकों को भी हैरान होना पडा है । व्यक्ति जिसका मद करता है, वह शक्ति उसके लिए अगले जन्म में दुर्लभ हो जाती है ।

6) हर्ष – बिना कारण अन्य जीवों को दु:खी कर मन में खुश होना अथवा जुआँ, शिकार आदि सात व्यसनों का सेवन कर मन में खूश होना हर्ष है ।

इन छह अंतरंग शत्रुओं एवं राग-द्वेष, निद्रा, आलस्य, प्रमाद आदि अनेक कारणों से जीवात्मा के लिए तत्त्वज्ञान की प्राप्ति दुर्लभ हो जाती है । अत: मन की शांति पाने के अभिलाषा हो तो मनुष्य जन्म आदि दुर्लभ सामग्री की महत्ता समझकर प्राप्त हुई इन सामग्रियों का सदुपयोग करके जीवन को आत्मिक विकास की दिशा में ले जाने के लिए प्रयत्नशील बनना चाहिए ।

जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति स्वत: ही अपनी जिम्मेदारी समझकर अहितकारी प्रवृत्तियों का स्वत: ही त्याग कर देता है परंतु आत्महित के विषय में जीवात्मा अपनी जिम्मेदारी नहीं समझता है । अपनी भौतिक इच्छाओं को पूर्ण करने के पीछे अपना आत्महित भूल जाता है ।

सांसारिक सभी कार्यों में व्यक्ति हमेशा उत्साहित रहता है, जिसके कारण मन कहीं भी स्थिर नहीं होता और सार-असार के विचार रहित इस जीवन में उसे तत्त्वज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती है । अत: तत्त्व प्राप्ति करने के ध्येय से साधकात्मा को व्यर्थ कार्यों का अवश्य त्याग कर रत्नत्रयी की साधना में विशेष प्रत्यन करना चाहिए । **(क्रमश:)**

शांत सुधारस

जीवन में शांति का उपाय

विवेचनकार : **प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

• याद आ जाती है उस लोभी फूलचन्द सेठ की बात ।

सेठजी का अधिकांश व्यापार विदेशों में होता था । अनेक बार उन्हें समुद्री यात्राएँ करनी पड़ती थीं । एक बार उनके किसी मित्र ने कहा-**''सेठजी ! आपको अनेक बार समुद्री यात्राएँ करनी पड़ती हैं । समुद्री यात्रा कभी-कभी अत्यन्त आपत्ति का कारण बन सकती है । समुद्र में कई बार तूफान भी आते हैं, अतः अपने जीवन की सुरक्षा के लिए कम-से-कम आप तैरना सीख लीजिए ।''**

सेठ ने कहा-**''तुम्हारी बात तो ठीक है, किन्तु मुझे फुर्सत कहाँ है कि मैं तैरना सीख सकूँ ?''**

मित्र ने कहा-**''फुर्सत तो नहीं है, किन्तु जीवन तो बचाना होगा न !''**

सेठ ने कहा-**''कोई दूसरा उपाय बता दो ।''**

मित्र ने कहा-**''अच्छा ! तो अपनी प्रत्येक समुद्र-यात्रा में अपने साथ खाली डिब्बे ले लिया करो और जब जहाज टूट जाय तो उनके सहारे समुद्र में कूद पड़ना, जिससे आप बच सकोगे ।''**

सेठ ने कहा-**''यह अच्छी बात है ।''**

और सेठजी अपनी प्रत्येक यात्रा में अपने साथ खाली डिब्बे रखने लगे ।

एक बार सेठजी विदेश से समुद्री यान के द्वारा लौट रहे थे । मध्य मार्ग में ही समुद्र में तूफान आया और जहाज डिगमिगाने लगा ।

कप्तान ने कहा-**''अब परिस्थिति विकट है, जहाज को बचाना अशक्य है, जिसे तैरना आता हो, तैरकर अपनी जान बचा ले ।''**

सेठजी ने यह बात सुनी । खाली डिब्बे पास में ही पड़े थे । साथ ही विदेश से लौट रहे थे अतः सोने के सिक्के भी बड़ी संख्या में साथ में थे ।

सेठ ने सोचा-**''खाली डिब्बों को लेकर कूदना, इसके बजाय इनमें सोना मोहर भर लूँ-तो कितना अच्छा होगा ? मैं भी बच जाऊंगा और सार-सार भी बच जाएगा ।''**

तत्काल सेठजी ने एक डिब्बे में चार सौ सोना मोहर भर ली और उसे उठाकर समुद्र में कूद पड़े । सेठजी तैरना तो जानते नहीं थे । बेचारे समुद्र के गहन तल में जा पहुँचे ; लोभ ने उनके प्राण ले लिये ।

लोभी व्यक्ति की अधिकांशतः यही स्थिति होती है । वह कभी तृप्त होता ही नहीं है ।

• एक नगर के महाराजा का नियम था कि प्रातःकाल में उसके द्वार पर जो कोई भी याचक आए उसे वह मुँह मांगा दान देता था । इस प्रकार दान के प्रवाह व प्रभाव से उसकी कीर्ति दिग् दिगन्त तक

फैल गई । एक दिन उसके द्वार पर एक संन्यासी आया । राजा ने कहा-**``बाबाजी ! फरमाइये । आपको मैं क्या दूँ ?''**

संन्यासी ने कहा-**``बस ! मेरा यह छोटा सा पात्र सोना मोहर से भर दो ।''**

सुनते ही राजा ने खजांची को आदेश दिया । तत्काल खजांची एक थाल भर कर सोना मोहर ले आया और उसने वे मोहरें संन्यासी के पात्र में उंडेल दी, परन्तु आश्चर्य ! संन्यासी का पात्र खाली ही था । मुश्किल से उस पात्र का पैंदा ही ढक पाया था ।

राजा की सूचना से पुनः खजांची सोना मोहर ले आया । पुनः उस पात्र में उंडेल दी.....फिर आश्चर्य.....! पात्र खाली ही था । इस तरह बारम्बार की इस प्रक्रिया के बावजूद भी जब उस संन्यासी का पात्र भरा नहीं गया, तब महाराजा ने आश्चर्यचकित होकर संन्यासी को कहा-**``बाबाजी ! आज तक मैंने सभी याचकों की इच्छाएँ पूर्ण की हैं । परन्तु माफ करें, मैं आपके इस मनोरथ को पूर्ण नहीं कर सकता । क्या आप कृपया यह बतायेंगे कि आपका यह पात्र किस वस्तु से बना हुआ है ?''**

संन्यासी ने कहा-``राजन् ! यह तो सबसे अजीब पात्र है । यह न तो सोने का बना हुआ है.....न चांदी का । यह **एक लोभी इन्सान की खोपड़ी से बना खप्पर है,** इसमें कितना ही डालो, सबको अपने में समा लेगा । यह पात्र कभी भरता ही नहीं है ।''

सुनते ही महाराजा चकित हो गए । यह हालत है मानव के लोभ की ।

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यजी ने **'योगशास्त्र'** में कहा है-

आकरः सर्वदोषाणां, गुणग्रसन-राक्षसः ।
कन्दो व्यसनवल्लीनां, लोभः सर्वार्थबाधकः ।।

अर्थ :- ``लोभ सर्व दोषों की खान है, गुण का ग्रास करने वाला राक्षस है, सर्व आपत्तियों का मूल और सर्व सिद्धियों में बाधक है ।''

इस प्रकार इस संसार में एक ओर लोभ के भयंकर दावानल को शान्त करने की सबसे बड़ी समस्या है तो दूसरी ओर इन्द्रियों की अनुकूल तृष्णा भी जीवात्मा को सतत परेशान कर रही है ।

आँख को रुप-दर्शन में तृप्ति नहीं है । कितनी ही रुप-रमणियों के रुप का पान कर लिया, फिर भी जब नई रुप-रमणी पास से गुजरती है तो वह उसके रुप में मुग्ध बन जाता है । पेट की भूख भोजन से शान्त हो जाती है, किन्तु रुप-दर्शन की तृष्णा कभी तृप्त नहीं होती है ।

कान को मधुर संगीत के श्रवण से तृप्ति नहीं । रसना को मधुर स्वादिष्ट भोजन से तृप्ति नहीं ।

इस प्रकार सभी इन्द्रियाँ अनुकूल विषय की प्राप्ति होने पर भी सदा अतृप्त ही रहती हैं । अतृप्त इन्द्रियाँ नये-नये इष्ट-विषयों को पाने के लिए प्रयत्नशील बनती हैं । कदाचित् इष्ट-विषय मिल भी जाए तो भी वह तृप्त नहीं बनती है, बल्कि उसकी तृष्णा अधिक तीव्र बनती है ।

इस प्रकार इस संसार में एक ओर आत्मा लोभ से परेशान है तो दूसरी ओर तृष्णा से । इस प्रकार लोभ और तृष्णा के निरन्तर आतंक के कारण आत्मा क्षण भर भी सुख और शान्ति का आस्वादन नहीं कर पाती है ।

(क्रमशः)

शासन प्रभावना के समाचार

मरुधर रत्न, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के संयम स्वर्ण वर्ष में मंगल प्रवेश निमित्त श्री ओसवाल श्वेताम्बर मूर्तिपूजक तपागच्छ जैन संघ बाली द्वारा सर्वविरति स्वर्ण महोत्सव का पांच दिवसीय भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस प्रसंग पर श्री संघ द्वारा पूज्यश्री को **'सरस्वती नंदन'** पद से सन्मानित किया गया ।

दि. 1 फरवरी को सेसली तीर्थ की चैत्यपरिपाटी के बाद शाम को पूज्यश्री पुन:बाली नगर में पधारे । दि. 2 से 7 फरवरी तक बाली स्थिरता दरम्यान प्रतिदिन प्रात: 10.00 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 3 फरवरी को प्रवचन के बाद श्री संघ के साथ गाजते-बाजते पूज्यश्री के पगले नरेन्द्र परमार, मदनभाई, रमेशभाई, प्रविणभाई कितावत आदि के गृहांगण में हुए ।

दि. 4 फरवरी को प्रात: 9.30 बजे नाण में विराजमान चतुर्मुख परमात्मा के सन्मुख श्रावक जीवन के अलंकार स्वरुप समकित मूल बारह व्रत, विविध तप उच्चरण एवं अतीत भव के पुद्गल वोसिराने की क्रिया हुई । इस क्रिया में लगभग 90 लोगों ने भाग लिया । सभी के सामुहिक एकासने हुए । कार्यक्रम के बाद गाजते-बाजते श्री संघ के साथ पूज्यश्री के पगले श्रीपालजी बाफना, हस्तीमलजी, ताराबेन जेठमलजी के गृहांगण में हुए ।

दि. 5 फरवरी को प्रवचन के बाद रमेशकुमार, मोहनलालजी, पुखराजजी सोनी, रामलालजी छीपा के गृहांगण में पगले हुए ।

दि. 6 फरवरी को प्रवचन के बाद सुरेश शिवलालजी सुथार, सुभाष मीठालालजी वकील, मोहनलालजी मास्टर के गृहांगण में पगले हुए ।

दि. 7 फरवरी को प्रवचन के बाद सुरेशभाई-पारसभाई, अशोकभाई गेमावत आदि के गृहांगण में पूज्यश्री के पगले हुए ।

दि. 8 फरवरी को 8 कि.मी. विहार कर फालना पधारे । प्रात: 9.45 बजे श्री सर्वोदय पार्श्वनाथ आराधना भवन में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 9 फरवरी को प्रवचन के बाद श्री संघ के साथ गाजते-वाजते पूज्यश्री के पगले रमेशकुमार मोहनलालजी एवं पारसभाई बागरेचा के गृहांगण में हुए ।

दि. 10 फरवरी को 15 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री नेतरा-विहार धाम में पधारे ।

दि. 11 फरवरी को 10 कि.मी. विहार कर श्री वासुपूज्य स्वामी जैन संघ-सुमेरपुर पधारे ।

गांधी रोड से गाजते-वाजते श्री संघ द्वारा भव्य सामैया हुआ । सामैये के बाद पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद 40 रुपये की प्रभावना हुई । दि. 12 फरवरी को प्रात: 9.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

भारुन्दा (जिला-पाली राज.) में अंजनशलाका महोत्सव

दि. 13 फरवरी को 12 कि.मी. विहार कर भारुन्दा पधारे । श्री भारुन्दा शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन संघ के अन्तर्गत 2 वर्ष में आमूलचूल जीर्णोद्धार हुए नूतन जिनमंदिर **''श्री पार्श्ववल्लभ प्रासाद''** में परमात्मा के गर्भगृह में प्रवेश एवं अंजनशलाका-प्रतिष्ठा महोत्सव निमित्त **पूज्य मरुधर रत्न, पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद** का भव्य नगर प्रवेश हुआ ।

प्रात: 9.30 बजे पेचका से महावीर बेन्ड-फालना, भैरव दरबार बेन्ड-साण्डेराव, नासिक ढोल आदि की रमझट पूर्वक नौ बग्गियों में लाभार्थी परिवारों द्वारा जिनप्रतिमाएँ, गुरु मूर्ति एवं यक्ष-यक्षिणी आदि की प्रतिमाओं के साथ पूज्यश्री का भव्य नगर प्रवेश हेतु सामैया हुआ । नगर में बडे-बडे तीन स्वागत द्वार (कमान) एवं घर-घर तोरण पूर्वक भव्य सजावट की गई ।

सामैये के बाद प्रात: 10.17 बजे के शुभ मुहूर्त में मूलनायक श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ परमात्मा आदि जिनबिम्बों का गर्भगृह में मंगल प्रवेश का कार्यक्रम हुआ । संगीतकार दीपक गोयल द्वारा प्रभु भक्ति के गीत-गान के साथ झूमते-नाचते बडे हर्षोल्लास के साथ लाभार्थी परिवारों ने प्रभुजी को प्रवेश कराया । इसी के साथ अंजनशलाका-प्रतिष्ठा महोत्सव के शुभारंभ स्वरुप कुंभ स्थापना, अखंड दीपक स्थापना एवं ज्वारारोपण आदि मंगल विधि-विधान हुए । दोपहर 3.00 बजे मंदिरजी में पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा पढाई गई । आज से 11 दिनों तक तीनों टाईम के श्री संघ स्वामीवात्सल्य प्रारंभ हुए ।

दि. 14 फरवरी को श्री संघ की विनती का स्वीकार कर प्रतिष्ठा प्रसंग पर **'पूज्य नीतिसूरि समुदाय के वर्तमान गच्छाधिपति पू.आ. श्री ललितप्रभ-सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूज्य सा. श्री तत्त्वप्रज्ञाश्रीजी आदि ठाणा-3 पधारे ।'** प्रात: 10.00 बजे उपाश्रय में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । दोपहर 3.00 बजे मंदिरजी में वास्तु पूजा पढाई गई एवं शाम 8.30 बजे संध्या भक्ति हुई ।

दि. 15 फरवरी को प्रात: 10.00 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद भारुन्दा नगर के ठाकूर-योजन सिंहजी के गृहांगण में गाजे-बाजे के साथ पूज्यश्री एवं संघ के पगले हुए । दोपहर 3.00 बजे मंदिरजी में अंतराय कर्म निवारण पूजा पढाई गई एवं शाम को 8.30 बजे संध्या भक्ति हुई ।

दि. 16 फरवरी को प्रात: 10.00 बजे **मु. श्री शालिभद्रविजयजी** एवं **मु. श्री विमलपुण्यविजयजी** ने **पूज्य आचार्य श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के 50 वें वर्ष में प्रवेश निमित्त गुणानुवाद किये । फिर पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद मातुश्री भागुबाई मूलतानमलजी मुथा के गृहांगण में सकल संघ के साथ पगले हुए ।

दि. 17 फरवरी को प्रात: 10.00 बजे **मु. श्री स्थुलभद्रविजयजी** ने पूज्यश्री के साहित्य का परिचय दिया । फिर पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । दोपहर 3.00 बजे **वाराणसी नगरी** में पूज्यश्री के संयम स्वर्ण वर्ष में मंगल प्रवेश की अनुमोदनार्थ संयम संवेदना का कार्यक्रम हुआ । अमदाबाद से पधारे संकेतभाई शाह ने भाववाही संवेदना प्रस्तुत की । साथ ही पूज्यश्री द्वारा आलेखित **265 वीं पुस्तक श्रमण हितशिक्षा** का विमोचन घेवरचंदजी मुथा, बालचंदजी संकलेशा, बस्तीमलजी पिथाणी, हरकचंदजी मुथा, मूलचंदजी पिथाणी आदि श्री भारुंदा शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन संघ के वडिलों ने किया गया ।

दि. 18 फरवरी को प्रात: 6.30 बजे श्री संघ में अंजनशलाका विधि-विधान के मुख्य कार्यक्रम हेतु प्रतिष्ठाचार्य पूज्यश्री एवं समस्त साधु-साध्वीजी का पुन: सामैया हुआ । फिर मंदिरजी में माणेक स्तंभ स्थापना, तोरण स्थापना, क्षेत्रपाल पूजन, भैरव पूजन, नंदावर्त पूजन, नवग्रह, दशदिक्पाल एवं अष्टमंगल पाटला पूजन, लघु सिद्धचक्र पूजन एवं लघुबीसस्थानक पूजन के विधि विधान हुए । साथ ही आज से छह दिनों तक तीनों टाईम के स्वामी वात्सल्य हेतु **भरतचक्री भोजन मंडप** एवं **वाराणसी नगरी** का उद्घाटन हुआ । दोपहर 2.30 बजे अश्वसेन राजा, वामा रानी, इन्द्र-इन्द्राणी की स्थापना एवं च्यवन कल्याणक के मंगल विधि-विधान संपन्न हुए । समस्त विधि-विधान हेतु बेंगलोर से तुषारभाई शाह पधारे एवं संगीतकार दीपकभाई गोयल ने भक्ति की रमझट मचाई । शाम को वाराणसी नगरी में लवेशभाई बुरड ने संध्याभक्ति कराई ।

दि. 19 फरवरी को प्रात: 6.30 बजे से मंदिरजी में जन्म कल्याणक के विधि विधान के साथ 56 दिक्कुमारी द्वारा शुचिकर्म, 64 इन्द्रों द्वारा मेरु महोत्सव, इन्द्राणी महोत्सव एवं 250 अभिषेक आदि विधि विधान हुए । प्रात: 10.00 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । दोपहर 2.30 बजे से पंच कल्याणक पूजा एवं 45 आगम पूजा पढाई गई । शाम को वाराणसी नगरी में संगीतकार प्रतिकभाई गेमावत ने संध्याभक्ति में रमझट मचाई ।

दि. 20 फरवरी को प्रात: 6.30 बजे से अठारह अभिषेक हुए । फिर 9.00 बजे वाराणसी नगरी में चढावें की जाजम बिछाई गई । प्रारंभ में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुए । फिर संगीतकार प्रतिकभाई गेमावत ने नूतन जिनमंदिर के तीन ध्वजदंड, तीन कलश एवं तीन शिखरों पर कायमी ध्वजा तथा सात प्रभुजी की प्रतिष्ठा आदि चढावे बोलाए । मात्र 80 घरों के छोटे से संघ में 4 करोड से भी अधिक के चढावे हुए ।

दोपहर 2.00 बजे मंदिरजी में प्रियंवदा दासी द्वारा प्रभु के जन्म की बधाई, पाठशाला गमन, प्रभु का विवाह, मामेरा, राज्याभिषेक एवं नौ लोकांतिक देवों द्वारा प्रभुजी को तीर्थ प्रवर्तन की विनती आदि के विधि-विधान हुए । शाम को वाराणसी नगरी में शेष चढावे हुए । मुलनायक श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा का चढावा 45.45 में धाकीबाई मूलचंदजी पिथाणी परिवार, कायमी ध्वजा 151.51 में भागुबाई मूलतानमलजी मुथा परिवार । शांतिनाथ प्रभु प्रतिष्ठा 12.12 में घेवरचंदजी मुथा एवं कायमी ध्वजा 33.33 में घेवरचंदजी मुथा परिवार । तथा श्री गोडीजी पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा 24.24 में पारसमलजी मुथा एवं कायमी ध्वजा का चढावा 43.43 सुरजमलजी संकलेशा परिवार ने लिया ।

दि. 21 फरवरी को प्रात: 10.00 बजे से प्रभुजी के दीक्षा कल्याणक का भव्य वरघोडा हुआ । भैरव बेन्ड-फालना, महावीर बेन्ड-साण्डेराव एवं नासिक ढोल की रमझट के साथ ऐतिहासिक वरघोडा हुआ । नए बनाए रथ में प्रभुजी को विराजमान कर पूजा के वस्त्रों में रहे श्रावकों के द्वारा रथ खिंचा गया । हाथी, घोडे, ऊंट एवं प्रभुजी के रथ ने शासन की शोभा बढाई गई । दोपहर 1.00 बजे मंदिरजी में कुल-महत्तरा द्वारा हितशिक्षा एवं प्रभुजी के दीक्षा कल्याणक के विधि विधान हुए । पूज्यश्री ने नूतन प्रतिमाओं के केशलुंचन कर दीक्षा कल्याणक की विधि की । शाम को 4.30 बजे श्री संघ की ओर से चढावे के लाभार्थी पार्वतीबाई वीरचंदजी पिथाणी परिवार की ओर से अंजन बहोराया गया ।

शाम को महाराजा के वेश में प्रभुजी की 108 दीपक की भव्य आरती एवं तत्पश्चात् गुलाल बंदोली हुई ।

दि. 22 फरवरी को मध्यरात्रि के बाद 3.00 बजे से मंदिरजी में पूज्यश्री ने नूतन श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ पंचधातु की प्रतिमा, अटबडा नगर से पधारे श्री वासुपूज्य स्वामीजी की प्रतिमा, पंचतीर्थी एवं सिद्धचक्र आदि जिनबिंब की, परिकर, गणधर श्री गौतमस्वामी एवं यक्ष-यक्षिणी आदि देव देवियों की अधिवासना, अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा विधि की । महामंगलकारी इस विधान में 3.35 बजे अधिवासना विधि एवं 4.43 बजे अंजन विधि हुई ।

फिर 5.30 बजे प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक के रुप में समवसरण रचना, पोंखणा, पुष्पवृष्टि एवं प्रथम देशना आदि विधि-विधान तथा निर्वाण कल्याणक के 108 अभिषेक हुए ।

ठीक 10.00 बजे प्रतिष्ठा विधि हेतु माणेक स्तंभ स्थापना, तोरण स्थापना की विधि हुई । हाथी पर पधारे लाभार्थी परिवार ने तोरण बिंधने की विधि की । फिर 11.19 बजे शुभ मुहूर्त में बडे हर्षोल्लास के साथ 128 वर्ष प्राचीन मुलनायक श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ आदि की प्रतिष्ठा विधि संपन्न हुई । शिखरों पर ध्वजाएँ लहराई गई । 100 वर्ष के इतिहास में जिनालय प्रतिष्ठा एवं अंजनशलाका के प्रथम प्रसंग के साक्षी बनने का मंगल अवसर था । जैनों के साथ जैनेतरों में भी अत्यंत प्रसन्नता देखी गई । फले चुंदडी में 36 कोम को भी बिठाकर भोजन कराया गया ।

प्रतिष्ठा विधि के बाद पूज्यश्री का प्रासंगिक प्रवचन हुआ एवं बृहत् शांति सुनायी । इस प्रसंग पर गुरुपूजन का चढावा 2.22 में भीखीबाई दोलचंदजी मुथा-पूना एवं कामली अर्पण करने का चढावा हरकचंदजी देवीचंदजी मुथा परिवार ने लेकर गुरुपूजन एवं कामली अर्पण की ।

दि. 23 फरवरी को प्रातः 5.30 बजे लाभार्थी परिवार ने प्रतिष्ठाचार्य **पू.आ.श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि की निश्रा में प्रतिष्ठित नूतन जिनमंदिर का सकल संघ सहित गाजे-बाजे के साथ द्वारोद्घाटन किया । सामुहिक चैत्यवंदन के बाद मंदिर परिसर में पूज्यश्री का मांगलिक एवं प्रासंगिक प्रवचन हुआ । फिर 6 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री बांकली पधारे ।

श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैन संघ-बांकली ने गाजे-बाजे के साथ सामैया किया । सामैया के बाद उपाश्रय में मांगलिक प्रवचन हुआ एवं 100 रुपये की प्रभावना हुई। दोपहर 3.00 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ।

दि. 24 फरवरी को 12 कि.मी. विहार कर तखतगढ पधारे । जूना बस स्टेण्ड से गाजे-बाजे के साथ श्री आदिनाथ जैन संघ-तखतगढ की ओर से सामैया हुआ । मार्ग में गुरुभक्त शांतिलालजी भूताजी पोरवाल के गृहांगण में पूज्यश्री के पगले हुए । मंदिर दर्शन के बाद उपाश्रय में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद पूज्यश्री के संयम स्वर्ण वर्ष की अनुमोदनार्थ अक्षत वधामणा किया गया । 40 रुपये की प्रभावना हुई ।

दि. 25 फरवरी को 14 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री गुडाबालोतान पधारे । श्री संभवनाथ जैन संघ ने गाजे-बाजे के साथ पूज्यश्री का स्वागत किया । साथ ही गुरुभक्त नरेशकुमार तोगाणी परिवार के गृहांगण में पगले हुए । फिर उपाश्रय में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 26 फरवरी को 12 कि.मी. विहार कर आहोर पधारे । श्री पार्श्वनाथ जैन संघ ने गाजे-बाजे के साथ पूज्यश्री का सामैया किया । फिर पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन एवं संयम स्वर्ण वर्ष में प्रवेश की अनुमोदनार्थ अक्षत वधामणा किया ।

दि. 27 फरवरी को 14 कि.मी. विहार कर लेटा पधारे । श्री शांति-श्रेयांसनाथ जैन संघ ने गाजे-बाजे के साथ पूज्यश्री का सामैया किया । फिर पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन एवं अक्षत वधामणा हुए । शाम को 4 कि.मी. विहार कर ऋषभनगर-जालोर पधारे ।

दि. 28 फरवरी को प्रातः 9.30 बजे पूज्य आचार्य भगवंत का प्रेरणा दायी प्रवचन, गुरु वधामणा एवं संघ पूजन हुआ । –शाम को 5 बजे **पू.आ. श्री रत्नेसनसूरिजी म.सा.** एवं **पू.आ.श्री विमलप्रभसूरिजी म.सा.** आदि के संघ सहित वाजते-गाजते श्रीमान शिवलालजी पारसमलजी बोहरा (चैन्नाइ निवासी) के गृहांगण में पगले हुए । उसके बाद 5 कि.मी. विहारकर आई हॉस्पीटल-विहारधाम में स्थिरता की । दि. 1 मार्च को 13 कि.मी. विहार कर कलापूर्णसूरि स्मारकधाम-केसवणा पधारे ।

आगामी कार्यक्रम

दि. 25 मार्च से 2 अप्रेल – सुमेरपुर में नवपद ओली ।
दि. 20 अप्रेल से 23 अप्रेल – लाठारा में वर्षीतप पारणा एवं जिनालय की वर्षगांठ ।
दि. 24 अप्रेल से 26 अप्रेल – फालना में सर्वोदयमंदिर की वर्षगांठ निमित्त महोत्सव ।
दि. 29 अप्रेल से 3 मई – वडगांव में ध्वजा महोत्सव ।

सूरि **'प्रेम'** की जन्मभूमि पिंडवाडा की धन्य धरा पर **पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरिजी म.सा.** आदि साधु-साध्वीवृंद का **चातुर्मास हेतु मंगल-प्रवेश**
असाढ सुदी छट्ठ, वि.सं. 2082 दि. 19-7-2026 रविवार

जनवरी 2026 से दिसंबर 2026 तक दिव्यसंदेश मासिक के वार्षिक सहयोगी

मुख्य-सहयोगी

- **एक सद्गृहस्थ-**कांदिवली-बाली

सहयोगी

- **मातुश्री शांतिबेन पुखराजजी उमाजी करमाजी भंदर-**शांतिकमल-मुंबई
- **स्व. बदामीबाई चम्पालालजी राठोड़ (हस्ते राकेशभाई)** बाली, ईरोड़
- **मुनि स्थूलभद्रविजयजी** की प्रेरणा से **अ.सौ.मंजुला हसमुखलालजी महेता** मुंडारा-बोरीवली
- **ओटीबाई वालचंदजी, चाहत विनीतजी बोकरिया** विक्रोली (वे), खिमेल (राज.)

पूज्यश्री से पत्र सम्पर्क : **प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)
विहार में संपर्क सूत्र : सहदेव 98672 04942

चढावे को जाजम पर वासक्षेप

चढावे की रमझट

कल्याण महिमा समझाते हुए

चढावे का उल्लास

वरघोडे में गुरु-रथ

वरघोडे हेतु प्रयाण

वरघोडे में प्रभुजी का रथ

RNI No. MAHHIN/2000/00860 • Postal Reg. No. MCS/125/2024-26 • WPP License No. MR/TECH/WPP-285/South/2024-26
Posted at Patrika Channel STG Office Mumbai-1 • Date of Pub. 12 Day of every month • Posting Date 15th of every month

अंजन शलाका के बाद
प्रथम दर्शन एवं निर्वाण कल्याणक

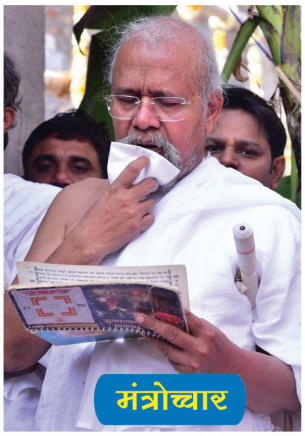

मंत्रोच्चार

प्रभुजी की प्रतिष्ठा

मंदिर की सजावट

मंदिरजी पर ध्वजा रोहण

गुरु पूजन

पूज्यश्री को कामली अर्पण

पोसलिया संघ का बहुमान

विहार से पहले मांगलिक एवं हितशिक्षा

If undelivered please return to : DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay,
Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002.

To,

From :

Published and Printed by : SURENDRA JAIN on behalf of
DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Printed at : SOMANI PRINTING PRESS, Gala No. 3-4,
Amin Ind. Estate, Sonawal Cross Road No. 2, Goregaon (E),
Mumbai-400 063. and Published from : Office No.304, 3rd floor,
Bay Vue Building, Wing--East Bay, Dr.M.B.Velkar
Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. EDITOR:SURENDRA JAIN